उपभोक्ता संतुलन - मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण :—

मार्शल द्वारा प्रतिपादित उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत उपयोगिता विश्लेषण किया है। वे यह मानते है कि बाजार माँग उपभोक्ताओं की माँग का कुल योग होता है। उनके अनुसार मुद्रा द्वारा उपयोगिता की माप की जा सकती है।

मार्शल ने उपभोक्ता व्यवहार की व्याख्या एवं संतुलन की स्थिति

Scanned with CamScanner

को बताने के लिए दो नियमों का सहारा लिया है। वे नियम हैं-

1. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम — इसके सहारे उन्होंने यह बताया है कि साम्य वहाँ होगा जहाँ मूल्य सीमांत उपयोगिता के बराबर होगा।

2. सम-सीमांत उपयोगिता नियम या प्रतिस्थापना का नियम :—

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम में मार्शल ने यह स्पष्ट किया है कि जब उपभोक्ता किसी वस्तु की उत्तरोत्तर अधिक इकाइयों का प्रयोग करता जाता है तब उनसे प्राप्त होनेवाली उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है। इसलिए कोई भी विवेकशील उपभोक्ता अपनी पूरी आय को किसी एक वस्तु के उपभोग पर व्यय नहीं करेगा। उपभोक्ता अपनी सीमित आय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है। अतः, वह अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं के क्रय पर इस तरह से व्यय करेगा कि उनके अंतिम प्रयोग से उसे समान संतुष्टि प्राप्त हो। जिस बिन्दु पर यह स्थिति होगी, उपभोक्ता के लिए वह अधिकतम संतुष्टि का बिन्दु होगा। इन दोनों नियमों के आधार पर उपभोक्ता साम्य का संक्षिप्त विवरण आगे प्रस्तुत है।

मार्शल ने स्पष्टतः यह बताया है कि उपभोक्ता किसी वस्तु के उपभोग पर जैसे-जैसे व्यय करता जाता है, उसकी सीमांत उपयोगिता घटती चली जाती है। उपभोक्ता किसी वस्तु की उतनी ही इकाइयाँ खरीदेगा जिस बिन्दु पर वस्तु से प्राप्त होनेवाली सीमांत उपयोगिता वस्तु की कीमत के बराबर हो जाएगी। इसे ऊपर के रेखाचित्र में दिखाया गया है।

रेखाचित्र में E बिंदु पर वस्तु की कीमत एवं वस्तु की कीमत एवं वस्तु से प्राप्त होनेवाली सीमांत उपयोगिता दोनों बराबर है, अतः उपभोक्ता वस्तु की OA मात्रा का उपभोग करेगा तथा कीमत OP के बराबर निश्चित होगी। यहाँ E बिन्दु साम्य का बिन्दु है। यदि हम मान लें कि E' बिन्दु संतुलन का बिन्दु है तो इस बिन्दु पर वस्तु की सीमांत उपयोगिता वस्तु के मूल्य से अधिक है, इसी तरह यदि E'' बिन्दु पर संतुलन हो तो वस्तु की सीमांत उपयोगिता मूल्य से कम है। अतः, उपभोक्ता साम्य केवल E बिन्दु पर होगा जहाँ वस्तु की सीमांत उपयोगिता एवं मूल्य एक-दूसरे के बराबर हैं।

मार्शल ने यह बताया है कि उपभोक्ता अपनी संतुष्टि को अधिकतम करने के लिए सम-सीमांत उपयोगिता नियम या प्रतिस्थापन के नियम का सहारा लेता है, जिसका आधुनिक नाम अनुपातिकता का नियम है। कोई भी उपभोक्ता अपनी पूरी आय

एक ही वस्तु पर व्यय नहीं करेगा, क्योंकि उसे मिलनेवाली उपयोगिता बढ़ती जाएगी। इसलिए कोई भी विवेकशील उपभोक्ता अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं के उपभोग पर इस तरह से खर्च या उपयोग करेगा कि उसके अंतिम व्यय से सभी उपयोगों या मदों में उसे समान संतुष्टि प्राप्त हो सके। अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति के लिए उपभोक्ता कम उपयोगी वस्तु के बदले अधिक उपयोगी वस्तु का प्रयोग करेगा। इसीलिए इसे प्रतिस्थापन का नियम भी कहा जाता है। एक वस्तु के बदले ~~अधिक उपयोगी~~ दूसरे वस्तु का प्रयोग या प्रतिस्थापन की प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक वस्तुओं से प्राप्त होनेवाली सीमांत उपयोगिता सभी जगह बराबर न हो जाए। जिस बिन्दु पर यह स्थिति बनती है उसी बिन्दु पर साम्य की स्थिति होगी तथा उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्ति होगी।

Scanned with CamScanner